आतंकवादी नही राष्ट्रवादी

लेखक: अश्विनी कुमार

प्रकाशक: विद्याभारती, राजस्थान

Cover: www.behance.in

राष्ट्रवादियों को आतंकवादी मत बनाओ

(1)

राजनीति एक छल है, एक कपट है, एक धोखा है, फरेब है। राजनीति के कपटपूर्ण और आडम्बरयुक्त वातावरण से देश की जनता ऊब चुकी है। राष्ट्र चिंतन कर रहा है कि आखिर वह इस वातावरण से कैसे निकले । आज राजनीति का विद्रूप रूप हमारे सामने है। केवल वोटों की खातिर कांग्रेस किस प्रकार राष्ट्रवादियों को आतंकवादी बनाने पर तुली हुई है और एक के बाद एक देश के राष्ट्रभक्त हिन्दुओं को निशाना बनाया जा रहा है वह हमारे सामने है। वास्तविकता यही है जिसके पास जो है वो वही तो देगा। मुझे इस मौके पर एक प्रसंग याद आ रहा है। बात महात्मा बुद्ध के काल की है। सुबह का वक्त था। तथागत भगवान बुद्ध अपने शिष्यों के साथ जैतवन में दो रातें गुजार कर कहीं जाने की तैयारी में थे। अचानक एक व्यक्ति वहां आ पहुंचा–विकराल और महाकाय। उसने भगवान बुद्ध को आते ही गालियां देनी शुरू कर दीं। वह उनके मत को मानने वाला नहीं था।

भगवान ने कहा, "तुम्हें कुछ कहना है तो कहों, मैं तुम्हारी बातों को सुनकर उनका समाधान करने को तैयार हूँ।" पर व्यक्ति इतना उत्पाती निकला कि उसने गालियों का क्रम जारी रखा, भगवान बुद्ध के मुँह पर थूक भी दिया। महात्मा का शिष्य आनंद विचलित हो उठा उसने कहा, "इसने सारी मर्यादाओं का अतिक्रमण कर दिया। अब असहनीय हो रहा है। क्या करें। बुद्ध बोले, " यह व्यक्ति घृणा से इतना भरा है कि इसके पास देने को कुछ नहीं है, शब्द चूकते जा रहे है, यह उसकी भाषा है। इसे कुछ बोलो मत।"

वह व्यक्ति चला गया। कहते हैं, उस रात बुद्ध जैतवन में ही ठहर गए। उस गालियां देने वाले व्यक्ति को रात में बड़ा पश्चाताप हुआ। सोचा, सारी पराकाष्ठा पार करने पर भी तथागत ने कुछ न कहा, ओह! कितने शांतचित और महान हैं वह। दूसरे दिन सुबह की पहली किरण के साथ ही वह दौड़ता–हांफता जैतवन पहुंचा और बुद्ध के चरण पकड़ लिए। भगवान ने कहा,"बोलो क्या कहना है। उस व्यक्ति ने रो–रोकर पांव धो दिए, पर शब्द नहीं मिले। बुद्ध ने कहा, "देखते हो आनंद, आज भी इसके पास शब्द नहीं हैं, आंसू हैं, यही इसकी भाषा है। आज यही दे रहा है। जिसके पास जो है

वही तो देगा, इसके अलावा वह करेगा भी क्या।

सन् 2010 के दौरान कांग्रेस के नेताओं, चाहे वह गृहमंत्री पी. चिदम्बरम हो, दिग्विजय सिंह हो, अब्दुल रहमान अंतुले हों, राहुल गांधी हों या कांग्रेस के कुछ अन्य नेता हों सभी ने एक के बाद एक हिन्दुत्व को बदनाम करने का एक अभियान शुरू किया। गृहमंत्री पी.चिदम्बरम ने भगवा आतंकवाद का मिथक खड़ा करने का प्रयास किया। हालांकि उनकी पार्टी के ही लोगो के द्वारा इस पर आपत्ति किए जाने पर उन्होंने अपना वक्तव्य वापस जरूर लिया। उसके बाद दिग्गी राजा ने संघ को आतंकवाद से जोड़ दिया। राहुल गांधी ने तो संघ की तुलना प्रतिबंधित आतंकी संगठन सिमी से कर दी। इससे पहले अब्दुल रहमान अंतुले ने मुम्बई हमले के दौरान शहीद हेमंत करकरे की शहादत पर शरारत करते हुए उनकी मौत के लिए हिन्दू संगठन की ओर इशारा किया था। **हद तो तब हो गई जब राहुल गांधी ने अमरीकी राजदूत टिमोथी रोमर से भारत की आतंरिक स्थिति की चर्चा करते हुए हिन्दू आतंकवाद को आतंकी संगठन लश्कर से भी खतरनाक बताया।** विकिलीक्स के इस खुलासे के बाद कि कांग्रेस ने मुम्बई हमले के बाद मजहबी राजनीति का सहारा लिया, से हड़कम्प मच गया। सही बात है कांग्रेस के पास जो कुछ था वही उसने दूसरों को दिया। वैचारिक स्तर पर कांग्रेस खत्म हो चुकी है। अब उसका साम्प्रदायिक चेहरा सामने आ चुका है। इतिहास कभी–कभी अपने आप को दोहराता है। भारत में क्रांतिकारियों से हमेशा छल किया गया। यह छल कांग्रेस ने कैसे किया इसकी चर्चा मैं कल के लेख में करूँगा, लेकिन इतना जरूर कहना चाहूँगा कि अहिंसा हमारा परम धर्म रहा है, लेकिन कभी–कभी शांति के पौधों को रक्त से सींचना ही पड़ता है। (क्रमशः)

(2)

महात्मा गांधी के विचारों का मैं सम्मान करता हूं, लेकिन उन्होंने भी क्रांतिकारियों के साथ छल किया। कांग्रेस महात्मा गांधी की वारिस बन बैठी और देश पर राज करती रही। वर्तमान में भी वह अपने महाधिवेशन के मंच की पृष्ठभूमि में लगे चित्रों में बापू का चित्र लगाकर गांधी की विरासत को आज के गांधी से जोड़ लेती है। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में नमक सत्याग्रह अपने आप में आंदोलन कम और क्रांति की लहर ज्यादा थी। उस जमाने में भी ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान भारत में नमक से

सस्ती चीज और कुछ नहीं होती थी। आज भले ही बड़े बड़े कारखाने अस्तित्व में आ गए हों, पर उस समय तो कोई भी समुद्र के किनारे रहने वाला व्यक्ति पानी से नमक प्राप्त कर लेता था । इस गतिविधि पर भी जब अंग्रेजों ने रोक लगा दी तो बापू की आत्मा दग्ध हो उठी।

अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। बापू ने 12 मार्च, 1930 को दांडी यात्रा प्रारम्भ की। शुरू में तो 78 व्यक्ति थे, बाद में गिनती बढ़ गई। नमक कानून तोड़ा गया और नमक बनाया गया। अंग्रेजों के पास इसका कोई विकल्प न था कि वह दमन चक्र प्रारम्भ करते। ऐसा उन्होंने किया भी।

दमन चक्र प्रारम्भ हो गया। इस दमन चक्र की रूपरेखा को हमें समझना होगा, नहीं तो हमसे बहुत बड़ी भूल हो जाएगी। बिके हुए इतिहासकारों ने 'इतिहास' को तो लिखा, इतिहास का सच लिखने की उनकी हिम्मत न थी। जिस कालखंड में दांडी मार्च प्रारम्भ हुआ, उसमें क्रांतिकारी गतिविधियां क्या थी? इसे भी हमें देखना होगा। अहिंसक अपने मार्ग पर चल रहे थे। **बापू और बापू की तथाकथित अहिंसा ने उनके दिमाग में कूट–कूटकर यह बात भर दी थी कि जो भी क्रांतिकारी है उनका मार्ग हिंसा का है, वह उग्रवादी है, वह आतंकवादी है, अतः उनमें मेलजोल रखने वाला हर व्यक्ति राष्ट्रहित में बाधक है।**

सन् 1926 की एक घटना आपके समक्ष रखना चाहूंगाः

चन्द्रशेखर आजाद अंग्रेजों की नजर से बचकर व्यक्तिगत रूप से बापू से मिले थे और उन्हें सिर्फ इतना कहा था–

"बापू हमारें दिलों में आपके लिए बड़ा सम्मान है। सारा राष्ट्र आपका सम्मान करता है। आप कृपया हम पर एक उपकार कर दें। अपने व्यक्तिगत सम्बोधनों में हमें 'आतंकवादी' न कहा करें, इससे हमें दुःख होता है।"

बापू ने जवाब दिया–

"तुम्हारा मार्ग हिंसा का है और हिंसा का अवलम्बन लेने वाला हर व्यक्ति मेरी नजर में आतंकवादी है।"

चन्द्रशेखर वापस आ गए।

भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव सब बापू की नजर में आतंकवादी थे, जिन्हें अक्सर वह मार्ग से भटका हुआ कहते थे। जो बापू के अनुयायी थे, वह नेहरू और बापू के प्रभाव में क्रांतिकारियों को तो हेय दृष्टि से देखते थे, परन्तु जब ये अहिंसक किसी घटना के कारण ब्रिटिश जुल्म के कोपभाजन बनते थे और पुलिस उन्हें मार–मारकर बेहाल कर देती थी, तो इस अत्याचार

का क्रांतिकारियों पर बड़ा विपरीत असर पड़ता था।

वह सोचते थे कि लाखों लोग सिर्फ 'कायर' ही नही, किसी न किसी दृष्टिकोण से 'नपुंसक' भी है।

ऐसी ही एक घटना का जिक्र मैं चन्द्रशेखर आजाद की जीवनी से करना चाहता हूँ।

घटना वाराणसी की है।

वाराणसी में ऐसे ही एक अहिंसक को, जो सत्याग्रह पर बैठा था, उसे पिटते देख चन्द्रशेखर आजाद की आत्मा बगावत कर उठी। पहले तो सिपाहियों ने उसे मारा, फिर गंदी से गंदी गालियां दी, फिर उसे करीब–करीब नंगा कर दिया।

जब मां और बहन से रिश्ते जोड़ते अंग्रेजी पिट्ठू बापू को गालियां देने लगे तो चन्द्रशेखर आजाद ने एक बड़े से पत्थर से एक दमनकारी का सिर फोड़ दिया। वह गिरफ्तार भी हुए। उन पर कोड़ो की बारिश भी हुई। लेकिन बार–बार यही कहते रहे, 'जिल्लत की इस जिन्दगी से तो मौत बेहतर है।'

मैं भारत के जवान लड़के–लड़कियों, मर्दो और महिलाओं से सिर्फ एक ही प्रश्न करता हूँ :

"अंग्रेजों की लाठियां, उनके लात–जूते, उनकी निहायत गंदी गालियां खाकर, उनके कोड़े खाकर, मुंह नीचा किए, हाय–हाय चिल्लाते मर जाना बेहतर था या अत्याचार के विरोध में खड़ा होना उचित था।"

भगत सिंह तब एसैम्बली के बाहर चरखा लेकर नहीं गए थे। उन्होंने एसैम्बली के बाहर कोई 'वैष्णवजन तेने कहिये' की गुहार नहीं लगाई थी। वह किसी की हत्या भी नहीं करना चाहते थे। उनके हाथ में 'बम' था, जिसकी गूंज उस दिन लाहौर से लंदन तक गूंजी थी। सारा जीवन लड़े, पर शेरों की तरह रहे।

भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव फांसी के तख्ते पर अवश्य झूल गए, पर भारत की उबलती जवानी को फांसी पर चढ़ने से पहले यह संदेश अवश्य दे गए–

'मर कर भी न जाएगी, दिल से वफा की उल्फत,
मेरी मिट्टी से भी खूशबू–ए–वतन आएगी।'

"मेरा रंग दे बसंती चोला" की गूंज भी कश्मीर से कन्याकुमारी तक गूंजी।

आप 1930 से लेकर 1947 तक का ही स्वतंत्रता संग्राम का

इतिहास किसी ऐसी लेखनी का पढ़ लें जो न तो बिकी हुई हो, और न ही लाल रंग में रंगी, तो आपकी आत्मा क्रांतिकारियों के साथ हुए अन्याय से चीत्कार कर उठेगी। आप घबरा जाएंगे।

(क्रमशः)

(3)

कांग्रेसियों ने बापू के अन्तिम शब्दों को न मानकर आज तक उन्हें कांग्रेस पार्टी की सत्ता का साधन बनाया है। 1930 के बाद क्या हुआ, उसको भी नजरंदाज नहीं किया जा सकता। एक तरफ तो वह क्रांतिकारियों को फांसी के फंदे पर झूलते देखना चाहते थे, और दूसरी तरफ अराजकता के भय से इन ढ़ोंगी अहिंसकों की 'लालीपाप' देकर इनका समर्थन भी चाहते थे।

1930 के बाद हुआ क्या ?

क्या इसे हम गौण कर दें ?

राजगुरू, भगत सिंह और सुखदेव पर तो बर्बर कानून के तहत कारवाई शुरू हो गई पर जो शांति के देवदूत नमक बनाकर जेल में बंद थे, उनसे वार्तालाप शुरू हो गई।

आज मेरी कलम चुनौती भरी भाषा में भारत वर्ष के तमाम तथाकथित अहिंसकों, कांग्रेसियों और गांधीवादियों से यह प्रश्न करती है कि बापू समेत क्या किसी भी में यह हिम्मत हुई कि 'लार्ड इर्विन' को यह कह सकते कि हम तब तक कोई समझौता नहीं कर सकते जब तक इन क्रांतिकारियों को अंग्रेज छोड़ नहीं देते ? क्या हो जाता अगर जेल के बाहर भूख हड़ताल का ढ़ोंग करने वालों ने जेल के अन्दर इस मुद्दे पर 'भूख हड़ताल' की होती कि पहले भगत सिंह और उनके साथियों को छोड़ो, उन्होने किसी की हत्या नहीं की, केवल धमाका किया हैऔर उन पर चलाए जा रहे मुकदमे अंग्रेज वापस लें ?

अगर ऐसा होता तो भारत का इतिहास स्वर्णिम हो जाता। भगत सिंह को फांसी के तख्ते पर झुलाने की आज्ञा हो गई और 'गांधी–इर्विन' पैक्ट भी उसी वर्ष हो गया।

जरा इस समझौते को देंखें।

स्थितियां भारत में ही नही इंग्लैंड में भी बदली थी। लेबर पार्टी उसी वर्ष इंग्लैंड में आ गई थी। कंजरवेटिव हार चुके थे। पहला काम तब वहां के प्रधानमंत्री रैमसी मैक्डोनाल्ड ने यही किया कि भारत से वायसराय

लार्ड इर्विन को लंदन बुलाया।

इससे पूर्व वहां एक साक्षात्कार के क्रम में प्रधानमंत्री यह कह चुके थे–'भगत सिंह आदि का इरादा हत्या का नहीं था, वह धमाके से विरोध कर रहे थे।

लार्ड इर्विन से रैमसी मैक्डोनाल्ड का व्यापक विचार–विमर्श हुआ।

Round Table Conference का निमंत्रण कांग्रेस इसलिए ठुकरा चुकी थी क्यों कि बापू चाहते थे भारत से कांग्रेस के अतिरिक्त और कोई भी लंदन आमंत्रित न किया जाए।

रैमसी मैक्डोनाल्ड की इच्छा थी कि इसमें रियासती राजा भी बैठें, क्रांतिकारियों को भी बुलाएं और अहिंसकों को भी। राजे–रजवाड़े तक तो ठीक था लेकिन सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह और उनके साथियों और चन्द्रशेखर आजाद को इस कांफ्रैंस में बिठाने में भला बापू को क्यों एतराज था ? लेकिन बापू ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया।

30 नवम्बर, 1930 को यह कांफ्रैंस लंदन में न हो सकी।

ब्रिटिश राज सत्ता जानती थी कि क्रांतिकारियों से राष्ट्र की अस्मिता के विरोध में कुछ भी समझौता नहीं हो सकता, परंतु सुविधाभोगी कांग्रेसी कुछ भी कर सकते हैं।

अंततः वही हुआ।

सर तेज बहादुर सप्रू और डा.जयकर को बातचीत में मध्यस्थ बनाया गया। अहिंसकों ने पहली शर्त रखी,

पहले गांधी जी और नेहरू जी को रिहा किया जाए और साथ में वह जिसे भी रिहा करने को कहें, उन्हें भी किया जाए।

जनवरी 1931 में नेहरू तथा अन्य नेताओं के साथ गांधी जी जेल से बाहर आ गए।

इसी दौरान लार्ड इर्विन ने स्पष्ट पूछा "क्या आप भगत सिंह आदि को भी छुड़ाना चाहते हैं। हम उसकी आज्ञा ले लेंगे।"

बापू ने कहा, 'मैं भगत सिंह की भावना की कद्र तो करता हूं पर हिंसा के किसी भी पूजक को छोड़ने की पैरवी मैं नहीं कर सकता, इससे हमारे शांतिपूर्ण आंदोलन में दरार पड़ जाएगी। लोगो का इससे विश्वास उठ जाएगा।'

दूसरे दिन जेल में भगत सिंह ने कहा,

"जीवन की भीख मांगने से अच्छा है मैं यहीं प्राण दे दूं। अच्छा किया बापू ने हमारी वकालात नहीं की।"

बापू बाहर आ गए।

वह राउण्ड टैबल कांफ्रैंस में शामिल होने की बात मान गए।

विदेशी बहिष्कार नहीं करेंगे, इसे भी लिखित रूप में दे दिया।

4 मार्च, 1930 को अहिंसकों का आन्दोलन मूलतः धराशायी हो गया। सारे तथाकथित अहिंसक जेल से बाहर आ चुके थे।

4 मार्च, 1930 को गांधी–इर्विन समझौता हुआ। 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी लगी। क्या यह समझौता सम्मानपूर्ण था ?क्या यह क्रांतिकारियों से छल–कपट था ?(क्रमशः)

(4)

कभी–कभी इतिहास अपने आप को दोहराता है। क्या कांग्रेस ने तुष्टीकरण की नीति महात्मा गांधी से सीखी थी। इसके लिए मैं इतिहास के पन्नों के कुछ अंश आपके सामने रखना चाहता हूँ। **क्या महात्मा गांधी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन करके इस्लामी उग्रवाद को पनपाने का काम नहीं किया था ?**

प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ तो स्थिति बदली तथा तुर्की अंग्रेजों के विरूद्ध जर्मनी के पक्ष में हो गया। विश्व युद्ध में जर्मनी की पराजय के बाद अंग्रेजों ने तुर्की को मजा चखाने के लिए तुर्की को विघटित कर दिया। अंग्रेज तुर्की के खलीफा के विरोध में सामने आ गए। मुसलमान खलीफा को अपना नेता मानते थे। उनमें अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह की लहर दौड़ गई।

भारत के मुस्लिम नेताओं ने इस मामले को लेकर अंग्रेजों के विरूद्ध सन् 1921 में 'खिलाफत आंदोलन' शुरू किया। मुस्लिम नेताओं तथा भारतीय मुसलमानों को खुश करने के लिए गांधी जी ने मोतीलाल नेहरू के सुझाव पर कांग्रेस की ओर से खिलाफत आंदोलन के समर्थन की घोषणा की। श्री विपिन चन्द्र पाल, डा. एनी बेसेंट, सी.एफ एंड्रयूज आदि नेताओं ने कांग्रेस की बैठक में खिलाफत के समर्थन का विरोध किया, किंतु इस प्रश्न पर हुए मतदान में गांधी जी जीत गए। गांधी जी खिलाफत आंदोलन के खलीफा ही बन गए।

मुसलमानों व कांग्रेस ने जगह–जगह खिलाफत आंदोलन के

विरोध में प्रदर्शन किए। 'अल्लाह हो अकबर' जैसे नारे लगाकर मुस्लिमों की भावनाएं भड़काई गई। महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी तथा कुछ अन्य नेताओं ने चेतावनी दी कि खिलाफत आंदोलन की आड़ में मुस्लिम भावनाएं भड़काकर भविष्य के लिए खतरा पैदा किया जा रहा है किंतु गांधी जी ने कहा 'मैं मुसलमान भाइयों के इस आंदोलन को स्वराज से भी ज्यादा महत्व देता हूँ।'

भले ही भारतीय मुसलमान खिलाफत आंदोलन करने के बावजूद अंग्रेजों का बाल बांका नही कर पाए, किंतु उन्होंने पूरे भारत में मृतप्रायः मुस्लिम कट्टरपंथ को जहरीले सांप की तरह जीवित कर डाला। खिलाफत आंदोलन की असफलता से चिढ़े मुसलमानों ने पूरे देश में दंगे कर असंख्य हिन्दुओं की हत्या कर डाली। केरल में मालाबार क्षेत्र में मुस्लिम मोपलाओं ने वहां के हिन्दुओं पर जो अत्याचार ढ़ाए, उनकी जिस बर्बरता से हत्या की उसे पढ़कर हृदय भी दहल उठेगा। हिन्दू महासभा के नेता स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी ने आगे चलकर मालाबार क्षेत्र का भ्रमण कर वहां के अत्याचारों व हत्याकांड की पृष्ठभूमि पर 'मोपला' नामक उपन्यास लिखा था।

खिलाफत आंदोलन का समर्थन कर गांधी जी तथा कांग्रेस ने मुस्लिम कट्टरवाद तथा अलगाववाद को बढ़ावा दिया था। मोपलाओं द्वारा हिन्दुओं की नृशंस हत्या का जब आर्य समाज तथा हिन्दू महासभा ने विरोध किया तब भी गांधी जी मोपलाओं को 'शांति का दूत' बताने से नहीं चूके। महान स्वाधीनता सेनानी तथा हिन्दू महासभा के नेता भाई परमानंद जी ने उस समय चेतावनी देते हुए कहा था, 'गांधी जी तथा कांग्रेस ने मुसलमानों को तुष्ट करने के लिए जिस बेशर्मी के साथ खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया तथा अब खूंखार हत्यारे मोपलों की प्रशंसा कर रहे हैं, यह घातक नीति आगे चलकर इस्लामी उग्रवाद को पनपाने में सहायक सिद्ध होगी।'

स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी ने भी खिलाफत आंदोलन के समर्थन को देश के लिए, देश की एकता के लिए 'आफत' बताकर कड़ा विरोध किया था।

मालाबार में हिन्दुओं की हत्याएं

अ.भा.कांग्रेस की अध्यक्षा रही परम विदुषी डा.एनी बेसेंट ने 29 नवम्बर, 1921 को दिल्ली में जारी अपने वक्तव्य में कहा

था–'असहयोग आंदोलन को खिलाफत आंदोलन का भाग बनाकर गांधी जी तथा कुछ कांग्रेसी नेताओं ने मजहबी हिंसा को पनपने का अवसर दिया। एक ओर खिलाफत आंदोलनकारी मोपला मुस्लिम मौलानाओं द्वारा मस्जिदों में भड़काऊ भाषण दिए जा रहे थे और दूसरी ओर असहयोग आंदोलनकारी हिन्दू जनता से यह अपील कर रहे थे कि हिन्दू–मुस्लिम एकता को पुष्ट करने के लिए खिलाफत वालों को पूर्ण सहयोग दिया जाए।' बाकी चर्चा मैं कल के लेख में करूंगा। (क्रमशः)

(5)

महात्मा गांधी कांग्रेसी मुसलमानों को तुष्ट करने के लिए मोपला विद्रोह को अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह बताकर आततायियों को स्वाधीनता सेनानी सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे जबकि **मोपला में लाखों हिन्दुओं की नृशंस हत्या की गई और 20,000 हिंदुओं को धर्मांतरित कर मुस्लिम बनाया गया।**

उन्हीं दिनों मालाबार की पीड़ित हिन्दू महिलाओं ने तत्कालीन वायसराय लार्ड रीडिंग की पत्नी को एक ज्ञापन दिया था जिसमें आपबीती का का वर्णन करते हुए लिखा गया था–'हमारे अनेक निकट संबंधियों पर मोपलों ने 'अल्ला हो अकबर' के नारे लगाते हुए आक्रमण किए, उनके तलवारों व बरछों से अंग–भंग कर उन्हें अधमरा कर कुओं और तालाबों में फैंक दिया गया। गर्भवती महिलाओं के पेट में खंजर घुसेड़कर उन्हें तड़पा–तड़पाकर मारा गया। हमारे दुध मुंहे छोटे–छोटे बच्चों को भी मुस्लिम आततायियों ने हमारी गोद से छीन–छीनकर उनके टुकड़े कर फैंक दिए। हमारे वृद्ध माता–पिताओं को इस्लाम मजहब ग्रहण करने से इंकार करने के कारण यातनाएं दे–देकर मार डाला गया। युवतियों को पकड़कर एकांत में ले जाकर उन पर अमानवीय यातनाएं ढायी गई।

मोपलों द्वारा किए गए जघन्य अत्याचारों पर **डा.बाबा साहेब अम्बेड़कर ने अपनी पुस्तक भारत का विभाजन के पृष्ठ 187 पर** गांधी जी पर प्रहार करते हुए लिखा थाः

'गांधी जी हिंसा की प्रत्येक घटना की निंदा करने में चूकते नहीं थे, किंतु गांधी जी ने ऐसी हत्याओं का कभी विरोध नही किया। उन्होंने चुप्पी साधे रखी। ऐसी मानसिकता केवल इस तर्क पर ही विश्लेषित की जा सकती है कि गांधी जी हिन्दू–मुस्लिम

एकता के लिए व्यग्र थे और इस उद्धेश्य की प्राप्ति के लिए कुछ हिन्दुओं की हत्या से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था।' (उसी पुस्तक के पृष्ठ 157 पर)

केवल कांग्रेस तथा गांधी जी ही नहीं केरल के कम्युनिस्टों ने भी मोपला अत्याचारियों को 'हीरो' बनाने का प्रयास किया। मार्क्सवादी नेता ई. एम.एस. नम्बूद्रीपाद जब केरल के मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने मोपलाओं द्वारा किए गए अत्याचारों वाले मुस्लिम बहुल क्षेत्र में 'मल्लापुरम' जिले का गठन कर उन्हें प्रोत्साहन दिया। केरल में कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के सहयोग से सरकार बनाई तो उन्होंने मोपला अत्याचारियों को पेंशन दिलाने का घोर पाप किया। मालाबार और मुलतान के बाद सितम्बर 1924 में कोहाट में मजहबी उन्मादी मुसलमानों ने हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार ढाए। कोहाट के इस दंगे में गुण्डों द्वारा हिन्दुओं की नृशंस हत्याएं किए जाने का समाचार सुनकर भाई परमानंद जी, स्वामी श्रद्धानंद जी, डा.बालकृष्ण शिवराज मुंजे तथा लाला लाजपतराय ने एकमत होकर कहा था 'खिलाफत आंदोलन में मुसलमानों का समर्थन करने के ही यह दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं कि जगह–जगह मुसलमान घोर पाशविकता का प्रदर्शन कर हिन्दू समाज को चुनौती दे रहे है।'

दिसम्बर 1924 में बेलगांव में पं. मदनमोहन मालवीय जी की अध्यक्षता में हुए हिन्दू महासभा के अधिवेशन में कांग्रेस की मुस्लिम पोषक नीति पर कड़े प्रहार कर हिन्दुओं को राजनीतिक दृष्टि से संगठित करने पर बल दिया गया।

मजहबी उन्मादियों ने आर्य समाज के प्रचारक धर्मवीर, पंडित ,लेखराम और स्वामी श्रद्धानंद की हत्याएं की। आर्य समाज, हिन्दू महासभा और अन्य हिन्दू संगठनों को खतरे का आभास पहले ही हो गया था। इनकी हत्याएं क्यों की गई और कांग्रेस की भूमिका क्या रही इसकी चर्चा मैं कल के लेख में करूंगा। (क्रमशः)

(6)

यह देश का दुर्भाग्य रहा है कि कांग्रेस ने इस्लामी आतंकवाद के विरूद्ध एक शब्द भी नहीं बोला। जब आर्य समाज, हिन्दू महासभा और अन्य हिन्दू संगठनों ने शुद्धिकरण अभियान चलाया तो यह लोग कट्टरपंथियों की नजरों में कांटा बन गए। स्वामी श्रद्धानंद जी शिक्षाविद् तथा आर्य प्रचारक के साथ–साथ कांग्रेस के नेता भी थे। वह कांग्रेस

कार्यकारिणी के सदस्य भी थे। **स्वामी श्रद्धानंद और लाला लाजपतराय जी ने यह महसूस किया कि अगर मुसलमानों और ईसाइयों को हिन्दुओं के निर्बाध धर्मान्तरण की छूट मिलती रही तो यह हिन्दुस्तान की एकता के लिए भारी खतरा सिद्ध होगा।** स्वामी श्रद्धानंद जी, लाला लाजपतराय जी और महात्मा हंसराज जी ने धर्म परिवर्तन करने वाले हिन्दुओं को पुनः वैदिक हिन्दू धर्म में शामिल करने का अभियान शुरू किया। इतिहासकार शिवकुमार गोयल ने अपनी पुस्तक में कांग्रेस की भूमिका का उल्लेख किया है।

गांधी जी द्वारा खिलाफत आंदोलन का समर्थन किए जाने से मुसलमानों का उत्साहवर्द्धन हुआ। कांग्रेस के मुसलमान नेताओं ने स्वामी श्रद्धानंद जी के शुद्धि आंदोलन का विरोध शुरू कर दिया। कहा गया कि यह आंदोलन हिन्दू–मुस्लिम एकता में बाधा डाल रहा है। गांधी जी के निर्देश पर कांग्रेस ने स्वामी जी को आदेश दिया कि वे इस अभियान में भाग न लें। इससे हिन्दू मुस्लिम एकता में बाधा पड़ रही है। स्वामी श्रद्धानंद जी ने उत्तर दिया, 'मुस्लिम मौलवी' तबलीग' हिन्दुओं के धर्मान्तरण का अभियान चला रहे है। क्या कांग्रेस उसे भी बंद कराने का प्रयास करेगी। कांग्रेस मुस्लिमों को तुष्ट करने के लिए शुद्धि अभियान का विरोध करती रही। स्वामी श्रद्धानंद जी ने कांग्रेस से संबंध तोड़ लिया।

स्वामी श्रद्धानंद जी शुद्धि अभियान में पूरे जोर–शोर से सक्रिय हो गए। 60 मलकाने मुसलमानों को पुनः वैदिक (हिन्दू) धर्म में दीक्षित किया गया। गांधी जी तथा कांग्रेस मुस्लिमों को प्रसन्न करने के लिए शुद्धि आंदोलन का निरंतर विरोध करते रहे। मौलानाओं के तबलीग अभियान के विरूद्ध उन्होंने कभी एक शब्द भी नहीं कहा । यह थी कांग्रेस की 'छद्म –धर्मनिरपेक्षता।' उन्मादी मुसलमान स्वामी जी के शुद्धि अभियान को सहन नहीं कर पाए। पहले तो उन्हें धमकियां दी गई, अंत में 22 दिसम्बर, 1926 को दिल्ली में अब्दुल रशीद नामक एक मजहबी उन्मादी ने उनकी गोली मारकर हत्या कर डाली।

स्वामी श्रद्धानंद जी की इस नृशंस हत्या ने पूरे देश को व्यथित कर डाला था।

दूसरी ओर गांधी जी ने यंग इंडिया में लिखा, 'मैं भाई अब्दुल रशीद नामक मुसलमान, जिसने श्रद्धानंद जी की हत्या की है, का पक्ष लेकर कहना चाहता हूं, इस हत्या का दोष हमारा है। अब्दुल

रशीद जिस धर्मोन्माद से पीडित था, उसका उत्तरदायित्व हम लोगो पर है। द्वेषाग्नि भड़काने के लिए केवल मुसलमान ही नहीं, हिन्दू भी दोषी है।'

स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी ने उन्हीं दिनों 20 जनवरी, 1927 के 'श्रद्धानंद' के अंक में अपने लेख में गांधी जी द्वारा हत्यारे अब्दुल रशीद का पक्ष लेने की कड़ी भर्त्सना करते हुए लिखा–'गांधी जी ने अपने को शुद्ध हृदय, 'महात्मा' तथा निष्पक्ष सिद्ध करने के लिए एक मजहबी उन्मादी हत्यारे के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। वे स्वामी श्रद्धानंद जी जैसे राष्ट्रभक्त की हत्या के लिए उन्हीं की विचार–धारा अर्थात दृढ़ हिन्दुत्वनिष्ठा तथा शुद्धि कार्य को जिम्मेदार सिद्ध करना चाहते हैं। मालाबार के मोपला हत्यारों के प्रति वे पहले ऐसी ही सहानुभूति दिखा चुके हैं।'

गांधी जी ने स्वयं 'हरिजन' तथा अन्य पत्रों में लेख लिखकर स्वामी श्रद्धानंद जी तथा आर्य समाज के 'शुद्धि आंदोलन' की कड़ी निंदा की । दूसरी ओर, मुसलमानों द्वारा जगह–जगह किए गए हिन्दुओं के बलात् धर्मांतरण के विरूद्ध उन्होंने एक भी शब्द कहने का साहस नहीं दिखाया।

(क्रमशः)

(7)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी कांग्रेस ने राष्ट्रभक्तों को अपमानित करने में कोई कसर नहीं छोडी। वीर सावरकर को बार–बार अपमानित किया गया। मेरा यहां गांधीवाद तथा सावरकरवाद का तुलनात्मक अध्ययन करने का कोई इरादा नहीं। देश की राजनीति, संस्कृति एवं सामाजिक परिस्थितियों पर कांग्रेस की नीतियों का प्रभाव पड़ा इसका तर्क संगत एवं निष्पक्ष लेखन ही हमारा उद्धेश्य है। मैं किसी को अपमानित और किसी की छवि को आघात पहुंचाना नहीं चाहता जो कुछ भी इतिहास में है उसे अपने नजरिए से प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं। गलत एवं सही का आकलन पाठक ही करेंगे। यह आवश्यक नहीं कि पाठक मेरे दृष्टिकोण से सहमत हों। गांधी जी की हत्या के बाद भारत में नई बहस शुरू हो गई। गांधी जी की हत्या के लिए संघ की विचारधारा को जिम्मेदार ठहराया गया। गांधी जी की हत्या के मामले में नाथूराम गोड़से, मदनलाल पाहवा, करकरे, गोपाल गोड़से, वीर सावरकर को गिरफ्तार कर लिया गया। **संघ का दूर–दूर तक महात्मा गांधी की हत्या से कोई लेना देना नहीं था, यह बात सर्वविदित थी। संघ की स्थापना डा.केशव बलिराम हेड़गेवार ने**

की थी जिनका सारा जीवन इतना उज्जवल और देदीप्यमान रहा कि किसी भी स्वयंसेवक में कोई कुसंस्कार होंगे, यह बात सोची भी नहीं जा सकती लेकिन कांग्रेस ने संघ की विचारधारा को फांसीवादी ठहराया और संघ की विचारधारा को गांधी जी का हत्यारा बताया। काफी जांच–पड़ताल के बाद गोड़से और नारायण आप्टे को तो नहीं परन्तु मदनलाल पाहवा, करकरे, गोपाल गोड़से और वीर सावरकर को छोड़ दिया गया। जांच में उनके खिलाफ कुछ नहीं मिला। संघ पर बार–बार प्रतिबंध लगाया गया और बार–बार हटाया गया।

1977 में श्रीमति इंदिरा गांधी ने विशेष तौर पर संविधान का संशोधन करवाकर भारत के संविधान के प्राक्कथन में धर्मनिरपेक्ष यानि "secularism' शब्द जुड़वाया तो आखिर इसका आशय क्या था और इसकी उपयोगिता क्या थी ?

आज फिर भारत में 'Secularism' का राग छेड़ने वाले लोगो की होड़ मच गई है। विश्व प्रसिद्ध संविधान विशेषज्ञ आचार्य दुर्गादत्त वसु ने अपनी व्याख्या में इस पर जो भी लिखा वह उनके द्वारा लिखित संविधान के मूल अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है।

मैं चाहता हूं कि उनकी व्याख्या अवश्य पढ़ी जाए ताकि भारत में 'Secularism' की पोल खुल सके।

चाहे उक्त संशोधन के पूर्व संविधान में Secular शब्द नही था, परन्तु संविधान की आत्मा इससे ओत–प्रोत थी। सारे के सारे संविधान के जानकारों ने इसकी एक ही व्याख्या की थी कि 'धर्म के प्रति संविधान की एक ही दृष्टि है कि भारत का अपना कोई 'State Religion' नहीं होगा, जिसे सब मानने को बाध्य हों, अपितु कोई भी नागरिक अपनी आस्था के अनुसार, चाहे जिस धर्म को भी माने, सरकार को इससे कोई लेना–देना नहीं।'

सर्वधर्म समभाव, सर्वपंथ समभाव या धर्म निरपेक्षता का बस इतना ही अर्थ था। भारत में हर व्यक्ति को धर्म के प्रति आस्था थी कहीं भी कोई द्वंद या संघर्ष नहीं था,लेकिन राजनीतिज्ञों ने मनुष्यों को भी धर्मनिरपेक्ष बना दिया। राजनीति में यह 'फैशन' एक संक्रमणकारी रोग की तरह फैला।

इनका चरित्र कैसा था, यह तो इन्होंने नहीं जाना, परंतु आचरण से तो नहीं, दिखावें के लिए स्वांग भरने लगे कि सारे धर्मो के प्रति इनके हृदय में अगाध प्रेम है।

जो हिन्दू नेता थे, उन्होंने अजमेर शरीफ में चादरें चढ़ानी शुरू कर

दी।

जो मुस्लिम थे, वे चर्चो में प्रार्थना करने लगे।

जो सिख थे उनमें कई माता की भेंटे गाते नजर आने लगे।

ऐसा समदर्शी या समवर्ती भाव या तो किसी ब्रह्मज्ञानी को प्राप्त हो सकता है या उसे जो परले दर्जे का मक्कार हो।

भगवान कृष्ण ने गीता में वचन दिए, जिस धर्म या परिवेश या संस्कार या आस्था में जन्म लिया, उसी में जन्म से लेकर मृत्यु तक रहो। ऐसा नहीं किया तो बड़ी भयावह स्थिति हो जाएगी।

स्थिति को भयावह वह इसलिए कह रहे हैं कि–

जन्मना हिन्दू के दिल में कुरान शरीफ के प्रति उतनी आस्था नहीं हो सकती, जितनी रामचरित मानस में होगी।

जन्म से मुस्लिम में भगवान कृष्ण के प्रति आस्था नहीं हो सकती, वह पैगंबर मोहम्मद पर ही स्वयं को केन्द्रित पाएगा।

जन्म से ईसाई में रामायण या कुरान शरीफ के प्रति उतनी आस्था न होगी जितनी की बाईबल और जीजस क्राइस्ट के लिए।

ऐसे में सनातन धर्म कहता है किसी भी धर्म का अनादर न करों, हर व्यक्ति का अपना मार्ग है। अपने धर्म पर अड़िग रहो, ढ़ोंगी मत बनों।

भारत का राजनेता ढ़ोंगी हो गया। तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोग सत्ता पर काबिज होने लगे अगर वे इतने ही बड़े 'ब्रह्मज्ञानी' होते तो उन्हें भारत रत्न क्या 'विश्वरत्न' से सम्मानित किया जाना चाहिए था। संसद ही नहीं, सारा देश जान रहा है कि 'धर्मनिरपेक्षता' का लबादा ओढ़े जो ये लोग स्वयं को 'धर्मनिरपेक्ष शक्तियां' बता रहे है, वे सबके सब इतने बड़े 'गुरूघंटाल' है कि किसी पर अपहरण का मामला है, किसी पर मर्डर और किसी पर फिरौती का मामला है, ये सबके सब एक से एक बड़े भयानक अपराधी हैं, परन्तु बेशर्मो की तरह ऐसे लोग चिल्लाने से बाज नहीं आते। (क्रमशः)

(8)

कल हम बात कर रहे थे भारत में धर्मनिरपेक्षता का लबादा ओढ़े राजनीतिज्ञों की। भारत में कई दशकों से तमाशा चल रहा है और तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोग स्वयं को एक ऐसी 'गांधीवादी' विचारधारा का प्रतिनिधि मान रहे है, जिसका बापू से दूर–दूर तक कोई संबंध नहीं है। विडम्बना यह

भी है कि इस विचारधारा को, जो न तो कोई विचार है और न ही धारा है, आज कांग्रेस संघ के आदर्शो के समानान्तर खड़ा करना चाह रही है। यह सब धर्मनिरपेक्षता की आड़ में पल भी रहा है और चल भी रहा है। यह कैसी धर्मनिरपेक्षता है, उसे एक कथा के माध्यम से आपके समक्ष रखना चाहूँगा।

"एक राजनेता थे। किस पार्टी के थे, इसका जिक्र मैं यहां नहीं करूंगा, लेकिन थे वह बड़े धर्मनिरपेक्ष। उन्होंने अपना नाम भी वैसा ही रखा छोड़ा था। नाम था–मोहम्मद निर्मोहानंद माइकेल सिंह।"

अपने ड्राईंग रूम में भी उन्होंने हर धर्म–मजहब के आराध्यों की बड़ी–बड़ी फोटो टांग रखी थी। जो भी आता उसे बड़े प्यार से वहां बैठाते। अभी अगला हतप्रत होकर फोटो देख ही रहा होता कि वह शुरू हो जाते 'भैया, हम तो जन्म और स्वभाव से धर्म निरपेक्ष हैं। सभी का आदर करते हैं, सभी को शीश नवाते है।'

उनकी दो रोलिंग मिले भी थीं, जहां 'रॉ मैटेरियल' वह बिजली और फोन की तारें अपने गुर्गो से उतरवाकर रातों रात गलाकर काम चलातें थे। जब पैसा बढ़ा, यश भी बढ़ गया, शराब की भट्ठियों का भी 'बिजनेस' कर लिया। इसके साथ ही किंतु धर्मनिरपेक्षता भी बढ़ गई। सुबह उठते ही चुपचाप मस्जिद के द्वार पर आंखे बंद किए बैंठे रहते। दोपहर को शिवजी के मन्दिर जा विराजते। वहां कीर्तन का आनन्द लेते।

शाम से पूर्व गुरूद्वारे के अन्दर नजर आते और रात को चर्च जाना न भूलते। उनकी बड़ी शोहरत हो गई। कुछ शुभासित वचन भी याद कर लिए। मुस्लिम उन्हें सच्चा मुसलमान बताते। हिन्दुओं की नजर में वे कट्टर हिन्दू थे। सिख उन्हें 'भापा जी' कहने लगे। ईसाई उनकी बड़ी कद्र करते।

लेकिन मौत किसको छोड़ती है। बेचारे धर्म निरपेक्ष साहब एक दिन चल बसे। सारे धर्मो का पाठ हुआ, लेकिन अंतिम संस्कार में मुसीबत खड़ी हो गई। हिन्दू उन्हें अपने रीति–रिवाज के अनुसार जलाना चाहते थे। मुस्लिम उन्हें दफनाना चाहते थे। ईसाई बंधुओं का हाल भी यही था। अब वह बेचारे वह ढ़ोंगी धर्म– निरपेक्ष कोई कबीर साहब की अवस्था के तो थे नहीं कि 'पुष्पमाला' में बदल जाते और संतों में वितरित हो जाते। शोर मचा और लोग मरने–मारने को तैयार हो गए। मार–काट की नौबत आ गई। प्रशासन ने लाश को अपने कब्जे में ले लिया। पहले तो शहर में

धारा 144 लगी, बाद में कर्फ्यू लग गया।

सब लोग उस धर्म निरपेक्ष को सम्मान देना चाहते थे। परिवार वालों को तो कोई पूछने वाला न था। एहतियात के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बुला ली गई। मुख्य सचिव से डी.एम. महोदय ने सम्पर्क साधा। मुख्य सचिव ने पूछा–'मृतक शरीर कहां है ? डी.एम. साहब ने कहा–'सर, कार्पोरेशन की कूड़ा गाड़ी' में उसे छिपाकर ऊपर से कूड़े से ढ़क दिया गया है, कोई शक भी नहीं करेगा। 'मुख्य सचिव ने कहा–'शाबास।'

उसके बाद संगीन माहौल देखते हुए कहा कि 'मृतक जन्म से तो हिन्दू था, अतः शमशान में रात को दो बजे उसका संस्कार कर दो।' रात के मौन में कूड़ा गाड़ी श्मशान के द्वार पर रूकी। शव उतारा गया। साथ में एक हवलदार भी था। जल्दबाजी में पुलिस हवलदार व कार्पोरेशन के कर्मचारी ने श्मशान के औघड़ बाबा और उनके कुत्ते की मौजूदगी में शरीर को आग को समर्पित कर दिया।

श्मशान में स्थित पीपल के वृक्ष पर बैठा एक प्रेत दंपति यह दृश्य देख रहा था। प्रेतनी ने कहा–सदियों से हम यहां बैठें हैं। यह पहला केस है कि किसी व्यक्ति को फूंकने के लिए घर वाले भी न आएं। एक पुलिस का हवलदार, दो कार्पोरेशन के कर्मचारी और एक कुत्ता ? यह कौन है ?किसी ने राम नाम सत्य है भी नहीं बोला ?

प्रेत ने कहा–जरा धीरे बोल, मैं तुम्हे समझाता हूँ। यह 'धर्मनिरपेक्ष' आदमी है। सारा जीवन यह व्यक्ति यह निर्णय नही कर सका कि वह किस धर्म का प्राणी है। बड़ा असमंजस में रहा। अब हमारी तरह लटकेगा भूत बनकर इन्हीं पीपलों पर, अपने ही परिवार का अंग हो जाएगा। हमें उसका स्वागत करना चाहिए। प्रेत और प्रेतनी ने श्रद्धा से उसे शीश नवा दिया और दो मिनट का मौन रखकर उस 'धर्मनिरपेक्ष' मृतक के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भी दे डाली। (क्रमशः)

(9)

तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोगों ने इस राष्ट्र में कभी सरस्वती गान, कभी वन्दे मातरम् गान का विरोध किया। राष्ट्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, यह हमारा संवैधानिक अधिकार है, परन्तु हिन्दुत्व को जिस रूप में प्रतिष्ठापित करने का जो प्रयत्न किया जा रहा है, वह दुखदायी है। अखबारों में संपादकीय के माध्यम से टुकड़ा–टुकड़ा हम विचारों का सम्प्रेषण

तो कर सकते है लेकिन कालजयी हिन्दुत्व को समझने और आत्मसात करने के लिए एक सम्पूर्ण ग्रंथ की रचना करनी पड़ेगी।

वेदों की ऋचाओं, मंत्रों में हिन्दुत्व को खोजना होगा।

उपनिषदों के दर्शन में हमें हिन्दुत्व की परिभाषा मिलेगी।

पुराणों का ज्ञान हमें हिन्दुत्व का बोध कराएगा।

गीता के बोल हमें हिन्दुत्व का पता देंगे।

कबीर, तुलसी, सूर, मीरा, सरना, सैन, गुरूनानक देव जी और गुरू अर्जुन देव जी की वाणी के माध्यम से हिन्दुत्व को जाना जा सकेगा।

शिवाजी महाराज, विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, वीर बंदा सिंह बैरागी हमें हिन्दुत्व की गरिमा बताएंगे।

सीता, सावित्री, अनुसुइया, बुंदेला, मीरा सरजो, अन्नपूर्णा जैसी नारियां हिन्दुत्व की पवित्रता की सानी होंगी।

परन्तु आज इस लाखों वर्ष पुरानी कालजयी सनातन संस्कृति को ललकारने का दुस्साहस किया है चंद ऐसे लोगो ने जो केवल वोटों की खातिर हमारी सारी धरोहर को धूल धूसरित कर देना चाहते है। निहित राजनीति स्वार्थो के तहत इस परम्परा को लील जाना चाहते है। उनके अनर्गल प्रलापों के विरोध में अगर अस्वीकृति मरा हाथ न उठा तो धिक्कार है इस हाथ को।

इस देश ने वीर सावरकर का कितना अपमान किया, यह बात किसी से छुपी हुई नहीं हैं। पर इस बात से स्पष्ट है कि 28 मई जन्मतिथि तथा 26 फरवरी पुण्यतिथि को सरकारी दूरदर्शन उनके नाम का उल्लेख या उनकी महत्ता का बखान नहीं करता। जिन लोगों ने सब सुविधाओं के साथ विशेष श्रेणियों में जेल यात्राएं की व विश्व स्तरीय नेता बन गए परन्तु जिन्होंने अंडमान की काल कोठरियों में अमानुषिक अत्याचार सहे, बैलों की जगह जुतकर कोल्हू चलाए वे देश विरोधी तथा साम्प्रदायिक कहलाए। वीर सावरकर किस तरह निर्भिक होकर अंग्रेजों की मांद में जा धमके, जिनके आग्नेय प्रवाह से परिपूर्ण भाषणों से अंग्रेज भयभीत हुए उस सावरकर को स्वतंत्र भारत में ब्रिटिश सत्ता भक्त जताने और चरित्र हनन करने में कांग्रेस नेता संलिप्त रहे। अंडमान जेल से उनका नाम पट्ट हटाया गया और संसद में चित्र लगाने तक का विरोध किया गया। इतिहास साक्षी है कि अंडमान की काल कोठरी में यातनाएं झेलने वाले सावरकर की काया भले

ही जर्जर हो गई हो मगर उनके दृढ़ संकल्प पर कोई आंच नही आई थी। **राष्ट्र को आराध्य मानने वाला हिन्दु साम्प्रदायिक कैसे हो सकता है। संसार के किसी देश में 80 प्रतिशत की बहुमत वाली जनसंख्या को साम्प्रदायिक नहीं माना जाता।** वह तो अपने आप में एक स्वस्थ एवं सबल राष्ट्र होने का सामार्थ्य रखती है परन्तु हमारे यहां ऐसा इसलिए होता है कि हिन्दू संगठित न होकर अलग–अलग पार्टियों को अपनी रूची के अनुसार वोट देता है और मुस्लिम अल्पमत संगठित होकर हिन्दू के मुकाबले एक मुसलमान को वोट देकर सफल बनाता है। मुसलमान के वोट किसी भी गैर मुसलमान को तब ही मिलते है जबकि मुसलमान चुनाव क्षेत्र में न हो। इसमें उसके वोट का महत्व है । हिन्दुओं के वोट अब तक धर्मनिरपेक्ष दलों को ही मिलते रहे है इसलिए उनके वोट की कोई कीमत नहीं है। यह धर्मनिरपेक्ष पार्टियां, हिन्दुओं के वोट लेकर साम्प्रदायिकता को पालती–पोसती रही हैं और पाल–पोस रही है, इसलिए उनकी हर बात का महत्व होता है और हिन्दुओं की हर बात साम्प्रदायिक और राष्ट्र विरोधी बन जाती है।

कांग्रेस हिन्दू विरोध की सीमा तक जाकर भी खुद को राष्ट्रीय संस्था बताती है और हिन्दुवादी संस्थाओं को राष्ट्रीय नहीं मानती। भारत में भगवान राम लोगों के रोम–रोम में बसे हैं लेकिन श्रीराम मन्दिर का निर्माण नहीं हो रहा। यह इस राष्ट्र के लिए शर्म की बात है। जरा सोचिए यह मसला रामजन्म भूमि का न होकर किसी मुस्लिम भवन का होता जिसे हिन्दुओं ने कब्जाया होता तो देश भर में ऐसा बवाल मचता कि कांग्रेस और अन्य दल धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देकर उसे तुरन्त मुक्त करा लेते। कांग्रेस ने संघ विरोधी कार्ड क्यों खेला इसकी चर्चा में कल के लेख में करूँगा। (क्रमशः)

(10)

कांग्रेस ने संघ को निशाना पहली बार नहीं बनाया, बल्कि उसने हिन्दु तथा मुसलमानों के मध्य खाई बनाने का ही काम किया है। उसने हमेशा मुस्लिम समाज को तुष्टीकरण के माध्यम से अपना मतदाता बनाये रखने का प्रयास किया। **देश में संघ को आतंकी संगठन के रूप में प्रचारित किया जाना कांग्रेस की सुनियोजित चाल है।** कांग्रेस जानती है कि मुसलमान भाजपा को वोट नहीं देता और मुसलमान वोट क्षेत्रीय दलों में बिखर जाता है, क्यों न ऐसा कुछ किया जाए जिससे एक बार फिर मुसलमान

वोट एकमुश्त उसकी झोली में आकर गिरे। मनमोहन सिंह शासन में सच्चर कमेटी और रंगनाथ मिश्र आयोग ने मुसलमानों को पीड़ित, शोषित और उपेक्षित बताया और अब्दुल रहमान अंतुले, दिग्विजय सिंह और चिदम्बरम ने भारतीय राष्ट्र–राज्य और सुरक्षा बलों को मुस्लिम विरोधी साबित करने का अभियान चलाया। अब राष्ट्रवादी हिन्दू संगठन संघ को आतंकी साबित करने का अभियान चलाया जा रहा है। सत्ता के दम पर विपक्ष का दमन करना कांग्रेस का इतिहास रहा है।

भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में आपातकाल के दौरान उसने लोकनायक जयप्रकाश नारायण सहित जनसंघ और संघ के नेताओं को राष्ट्रद्रोही बताया था। निरंकुश कांग्रेस को जब भी अपनी सत्ता खतरे में दिखी, उसने राष्ट्रहित त्याग कर अवसरवादी राजनीति का सहारा लिया और राष्ट्रवादी तत्वों को हाशिये पर डाला। बिहार विधानसभा चुनावों से पहले अल्पसंख्यकों के वोट हासिल करने के लिए कांग्रेस ने पुरानी चालें चलीं लेकिन मुस्लिमों के वोट उनके खाते में नही गए और उसका सफाया हो गया। अब उत्तर प्रदेश के चुनावों को देखते हुए कांग्रेस हिन्दु विरोधी अभियान और तेज करेगी, इसके लिए लोगो को सतर्क रहना होगा। जब गृहमंत्री पी.चिदम्बरम ने भगवा आतंकवाद शब्द का प्रयोग किया तो अहसास हुआ कि भारत में रह रहे हिन्दुओं की हालत क्या है। **पिछले वर्ष राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एम.के.नारायणन ने देश में 800 आतंकी समूहों के सक्रिय होने की बात कही थी। आखिर उनमें से कितने भगवा आतंकी है। आज भारत के 632 में से 232 जिले नक्लवाद से ग्रस्त है, उनमें से कितने जिलों में भगवा नाम से आतंकवादी सक्रिय है। क्या पंजाब के आतंकवाद में कहीं भगवा था ? क्या कश्मीर में कहीं भगवा बचा है ? क्या उत्तर–पूर्वांचल में भगवा है, क्या मध्य भारत में चल रही गतिविधियां भगवा रंग के कारण है ?यदि ऐसा नहीं है तो 'भगवा आतंकवाद' शब्द गढ़ने का क्या औचित्य है।**

प्रतिष्ठित स्तम्भकार और पत्रकार हृदयनारायण दीक्षित ने अपने एक लेख में भगवा की व्याख्या कुछ इस तरह की है : भगवा भारत का पर्यायवाची है। भा का अर्थ प्रकाश है। आभा में भा की दीप्ति है। प्रभा में दीप्ति वाचक है। रत का अर्थ संलग्न होता है। **सो भारत का अनुभूत अर्थ है–प्रकाश संलग्न राष्ट्रीयता।** भगवा दिव्य ज्योति अनुभूति है। दीप–प्रकाश की ज्योति का अन्तर्मन त्यागी है। दीप स्वयं जलता है, स्वयं के अंधकार

की परवाह नहीं करता लेकिन तमस्–अंधकार से लड़ता है। तमस् से लड़ते समय उसकी ज्योति का रूपरंग भगवा हो जाता है। भारत और भगवा ज्योतिवाची है। वैदिक ऋषि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के प्रार्थी थे। भगवा भारत की प्रकृति और संस्कृति है। भगवा स्व–भाव है, भाग्य सम्भावना है, भगवान परम् लक्ष्य है। यहां भगवान आस्था नहीं है। भगवान परम ऐश्वर्यवान अनुभूति है। भगवा भाग्य और भगवान ज्योतिर्गमय अभीप्सा के ही चरण है। भगवा बीज है। हरेक बीज में अनंत सम्भावनाएं है, वह भविष्य का पौधा है, सुरभित पेड़ है, ढेर सारे फूलों से लदा–फदा वृक्ष है। वह फिर नए बीज देने की सम्भावानाओं से भी लैस है। बीज का परिपूर्ण वृक्ष बननाा भाग्य है, सड़कर नष्ट हो जाना, वृक्ष न बन पाना दुर्भाग्य है और चहचहाते पक्षियों के बसेरे, हरा–भरा, फूलों–फलों से लदा वृक्ष बन जाना सौभाग्य। भाग्य सम्भावना है, भगवा इस सम्भावना का उत्प्रेरक है। भगवान हो जाना चरम परम अभीप्सा है। लेकिन भारत के दुर्दिन है। **गृहमंत्री पी. चिदम्बरम 'भगवा' का मतलब नहीं जानते। वे काफी पढ़े लिखें भी है। उनका ताजा शोध 'भगवा आतंकवाद' है। उन्होंने भारतीयता के पर्यायवाची भगवा को आतंकवाद से जोड़ा है। बेशक वे दया के पात्र है लेकिन क्षमा के योग्य नहीं। उन्होंने भारत की सनातन प्रज्ञा को गाली दी है।** 'भगवा' भारत का अन्तर्मन है। अन्तर्मन का निर्माण अनुभूति से होता है। अनुभूति का कोई रूप नहीं होता इसीलिए चीख, पुकार, प्रीति और प्यार को देखा नहीं जा सकता। भगवा त्यागी चित्त का उल्लास है, अहंशून्यता का आनन्द है, शून्य से विराट हो जाने का उत्स है। वैदिक दर्शन में सृष्टि के सभी रूपों में एक ही सत्ता की अनुभूति है।

(क्रमशः)

(11)

देश के कुछ हिस्सों में हुए बम धमाकों में हिन्दूवादी संगठन अभिनव भारत का नाम उछला लेकिन किसी पुरोहित अथवा किसी प्रज्ञा की गिरफ्तारी हो भी तो उन्हें लेकर पूरे समुदाय को बदनाम किया जा सकता है। अभिनव भारत जैसे संगठन का लश्कर, हरकत उल जिहाद, अल इस्लामी की तरह कोई हथियारबंद कैड़र नहीं है।

समझौता एक्सप्रेस बम विस्फोट के फौरन बाद तत्कालीन गृहमंत्री शिवराज पाटिल ने कहा था कि इस विस्फोट में विदेशी ताकतों का हाथ

है। यह समाज में अस्थिरता फैलाने के उद्धेश्य से किया गया है, जबकि इस मामले में भारतीय जांच एजेंसियों और अमरीकी खुफिया एजेंसियों ने अपनी–अपनी जांच में यह माना है कि समझौता एक्सप्रेस धमाकों में लश्करे तैयबा के आरिफ कासमानी का हाथ है और इसी को बुनियाद बनाकर जुलाई 2009 में अमरीका की सुरक्षा परिषद में प्रस्ताव लाकर लश्करे तैयबा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिबंधित कर दिया गया। इसके बावजूद कांग्रेसी नेताओं की जानिब से देश के हिन्दूं समाज पर आतंकवाद का तमगा चस्पा करने के लिए आए दिन लगाए जा रहे बिना सबूत आरोपों ने भारतीय जनता को गुमराह करने की कोशिश की है। यहां तक की खुफिया एजेंसियों के आला अफसर भी कांग्रेसी साजिश का शिकार होकर या दबाव में उनकी ही बोली बोलने लगे है। इस पूरे केस में बड़ी चालाकी से जिस सच्चाई को नजर अंदाज कर दिया गया है वह यह है कि **जिस समझौता एक्सप्रेस विस्फोट, दरगाह अजमेर शरीफ विस्फोट और मक्का मस्जिद धमाके में हिन्दू नौजवानों के नाम घसीटे जा रहे है, उन सभी मामलों में मुल्क की खुफिया एजेंसियां पहले ही मुस्लिम आतंकी संगठन का हाथ होने की बात साबित कर चुकी है। यहां तक कि बड़ी संख्या में आतंकी संगठन से जुड़े लोग गिरफ्तार भी किए जा चुके है जिनमें सभी का सरगना सफदर नागौरी और इंडियन मुजरहिद्धीन से जुड़े कई नौजवानों को शामिल माना गया है।**

समझौता एक्सप्रेस में विस्फोट 18 फरवरी, 2007 को हुआ। एक हफ्ते में दो बार दिल्ली से लाहौर के लिए जाने वाली इस ट्रेन में उस वक्त धमाका हुआ जब ट्रेन दिल्ली से 80 किलोमीटर उत्तर में पानीपत के दीवाना स्टेशन के पास थी। इस विस्फोट में मारे गए 68 लोगों में से 42 पाकिस्तानी नागरिक और 26 भारतीय नागरिक थे जिसमें भारतीय सेना के दर्जनों जवान भी हताहत हुए। शुरूआती जांच में पाया गया कि सूटकेस में आईईडी के जरिये विस्फोट कराया गया। इस तरह का एक सूटकेस रेलवे ट्रेक पर भी पड़ा हुआ मिला जिसमें प्लास्टिक के थैले में डेटोनेटर से जुड़े आईईडी रखे हुए थे जिनसे डिजिटल टाइमर भी जुड़ा हुआ था। सूटकेस के अन्दर पेट्रोलियम पदार्थों से भरी आठ बोतलें भी मिलीं जो विस्फोट के बाद आग भड़काने के मकसद से रखी हुई थी। विस्फोट के कुछ दिनों के बाद इलाकाई जांच करने वाले आला अधिकारियों ने दावा किया था कि इस सूटकेस को ट्रेन से बाहर फैंक दिया गया था। विस्फोट के बाद बाकी

बचे ट्रेन के आठ डिब्बों को यात्रियों को लेकर लाहौर जाने की इजाजत दे दी गई। आखिरकार दोनो देशों की जांच एजेंसियों की अलग–अलग जांच के बावजूद घटना के संदर्भ में किसी नतीजे तक नहीं पहुंचा जा सका था। इसके बाद मार्च 2007 में हरियाणा पुलिस ने इंदौर से दो लोगो को गिरफ्तार किया, जिन पर विस्फोट में इस्तमाल सूटकेस बेचने का इलजाम था। जांच में यह भी पता चला कि दीवाना स्टेशन पार करते ही ट्रेन 20 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार तक धीमी हो गई थी जिससे अंदाजा लगाया जाता है कि हादसे को अंजाम देने वाले विस्फोट से पहले ट्रेन से कूद गये थे।

मार्च 2007 में चंडीगढ़ के रेलवे के आईजी श्री के.के.मिश्रा ने अपने बयान में कहा था कि विस्फोट में इस्तेमाल किए गए सूटकेस इंदौर से खरीदे गये थे और उनके तार पाकिस्तान से जुड़ते है। इस दौरान खुफिया सूत्रों के हवाले से मीडिया में खबर आई कि विस्फोट के पीछे लश्करे तैयबा और जैश ए मुहम्मद का हाथ है। यूपीए सरकार द्वारा पाकिस्तान व अमरीका को इस मामले में कुछ सबूत भी दिए जा चुके है।
(क्रमशः)

(12)

समझौता एक्सप्रेस विस्फोट की जांच की दिशा किस तरह मोड़ी गई। इसके साफ संकेत मिल रहे है। जुलाई 2009 को यूनाइटेड स्टेट्स आफ अमरीका के ट्रेजरी डिपार्टमेंट में समझौता एक्सप्रेस विस्फोट के सरगना लश्करे–तैयबा के आरिफ कासमानी को करार देते हुए यूनाइटेड स्टेट्स सुरक्षा परिषद की करारदाद नं. 1267 की रोशनी में हुक्मनामें 13224 के जरिये लश्करे तैयबा पर पाबंदी लगा दी गई।

हरियाणा पुलिस ने अपनी जांच के सिलसिले में यह भी पाया था कि विस्फोट में इस्तेमाल किया गया कोड़क ब्रांड का सूटकेस इंदौर की अभिनंदन मार्केट के कोठारी बैग सैंटर से खरीदा गया था और जिसका कवर दुकान के सामने के दर्जी से सिलवाया गया। इस सूत्र के सहारे की गई तहकीकात के सिलसिले में पुलिस के हाथ सिमी सरगना सफदर नागौरी के गिरेबान तक पहुंचे।

समझौता एक्सप्रेस विस्फोट की जांच की निगरानी करने वाली हरियाणा पुलिस के एडीशनल डायरेक्टर बी.एन.राय भी व्यक्तिगत रूप से स्वीकार करते है कि उनकी जांच की दिशा सही थी और सिमी के नेटवर्क ने इस घटना को अंजाम दिया। राव का कहना है

कि उनके जांच नतीजे को अमरीकी जांच एजेंसियों ने भी कबूल किया और सिमी की सरपरस्ती करने वाली तंजीम लश्करें तैयबा पर पाबंदी लगाई गई।

एक तरफ हिन्दुस्तानी खुफिया एजेंसियों के कुछ अफसर समझौता एक्सप्रेस के पीछे हिन्दू संगठनों को बदनाम करने से बाज नहीं आ रहें है, तो दूसरी तरफ 23 जनवरी, 2010 को पाकिस्तान के मशहूर अखबार डान को पाकिस्तान के विदेश मंत्री रहमान मलिक ने बयान दिया कि समझौता एक्सप्रेस विस्फोट के पीछे पाकिस्तान और पाक दशहतगर्दो के हाथ है लेकिन साथ ही यह भी जोड़ दिया गया कि इन दशहतगर्दों को भारत सरकार के एजेंट श्रीकान्त पुरोहित ने भाड़े पर रख लिया था। अगर देखा जाए तो पाक के इस इकबालिया बयान को भी भारतीय खुफिया एजेंसियां झुठलाने की कोशिश कर रही है।

इस साजिश में एक नया मोड़ तब आया जब महाराष्ट्र एटीएस समझौता एक्सप्रेस विस्फोट में एक नाम निहाद मुल्जिम के कर्नल श्रीकांत पुरोहित से तार जोड़ते हुए यह साबित करने में लग गये कि समझौता एक्सप्रेस में विस्फोट की शक्ल में अमोनियम नाईट्रेट का नहीं बल्कि आरडीएक्स का इस्तेमाल किया गया था, जिसे कर्नल पुरोहित ने नासिक के करीब देवावाली आर्मी कैम्प से चुराकर भगवान दास को दिया था जबकि सेना इस तरह की किसी भी चोरी से इनकार करती रही है। इससे संदेह पक्का हो रहा है कि कर्नल पुरोहित भारत सरकार के इशारे पर खुफिया एजेंसियों द्वारा प्लांटेड अफसर हैं क्या ?

इस सिलसिले में ताजा मोड़ तब आया जब एटीएस और सी.बी.आई ने मिलकर सरकार के इशारे पर देवेन्द्र गुप्ता व लोकेश शर्मा को रिमांड में लेकर उन्हें मानसिक और शारीरिक तकलीफों के साथ–साथ जज्बाती ब्लैक मेल करते हुए ये कहानियां गढ़ी कि इस समझौता एक्सप्रेस विस्फोट में आर.एस.एस. का हाथ है और भगवानदास नामी मुल्जिम को गायब कर उसकी जगह लोकेश शर्मा को सी.बी.आई. कहीं से पकड़कर ले आई ?

उल्लेखनीय है कि ब्लास्ट के बाद मौका–ए–वारदात से जमा किये गए सूटकेस और बमों के जरिये और सबूत के बचे निशानात की जांच के बाद करनाल के पास मधुबन स्थित फौरेंसिक लेबोरेट्री के माहेरिन ने भी इसमें अमोनियम नाईट्रेट के इस्तमाल की बात कही थी, जबकि एक साल बाद महाराष्ट्र एटीएस बिना किसी फौरेंसिक (वैज्ञानिक) जांच के जरिये इस

धमाके में आर.डी.एक्स. की बात कहकर उसका तार लेफ्टीनेंट कर्नल श्रीकांत पुरोहित से जोड़ने में लग गई।

(क्रमशः)

(13)

ऐसा लगता है कि मुस्लिम वोट बैंक को लुभाने के लिए कांग्रेस राष्ट्रव्यापी प्रपंच रच रही है और हिन्दु संगठनों को बदनाम करने की हरसंभव कोशिश कर ही है।

अगस्त 2010 को नासिक कोर्ट में एटीएस ने बयान दिया कि मालेगांव का आरोपी लेफ्टीनेंट कर्नन पुरोहित ही समझौता एक्सप्रेस बम ब्लास्ट का मुल्जिम है, जो 76 किलो आरडीएक्स कश्मीर से चुराकर लाया था, उसमें से कुछ आरडीएक्स का इस्तेमाल इस धमाके में किया गया था, बाकी आरडीएक्स छुपाकर कहीं रखी गई है नहीं मालूम ?इस मामले में दोनों एजेंसियां सेना और एटीएस के बीच कई बार खुलकर मतभेद सामने आ चुके है।

कांग्रेस पार्टी के सांसदों और अन्य दलों के सांसदों के दल ने मौका–ए–वारदात का जायजा लिया था। सभी ने एकमत से समझौता एक्सप्रेस घटना को पाकिस्तान की घिनौनी साजिश का जीता–जागता प्रमाण बताया था और आईएसआई, लश्कर–तैयबा, जैश–ए–मुहम्मद को इंसानियत के हत्यारे बताया था।

पूर्व केन्द्रीय सचिव मधुकर गुप्ता भी जांच एजेंसियों के द्वारा हिन्दू संगठनों को बिना ठोस सबूत के मुजरिम ठहराये जाने के खिलाफ अपनी नाराजगी जाहिर कर चुके है। इस सनसनीखेज और कीचड़ उछालने वाली सेक्यूलर पार्टियों के नेताओं की घिनौनी सियासत में से गंभीर सवाल खड़े होते है।

समझौता एक्सप्रेस विस्फोट में पिछले तीन–चार सालों से कितने व कौन–कौन मुसलमान यूपीए सरकार ने जेल में डाले हुए हैं, बताया जाए। ईमान वाले और वतन से मुहब्ब्त करने वाले मुस्लिमों का सवाल है कि अगर कुछ सिरफिरे हिन्दू नौजवान इस धमाके के कसूरवार है तो बेशुमार बेकसूर मुस्लिम नौजवान जेल में क्यों ?

हिन्दुओं का सवाल है कि जब विस्फोट में पाकिस्तान का हाथ है और भारत में लश्करे–तैयबा और सिमी से जुड़े कुछ कट्टरपंथी मुस्लिमो ने इसे अंजाम दिया है तो फिर कांग्रेस सरकार हिन्दू नौजवानों को फंसाने की सियासत कर, अपने देश पर कीचड़ उछालने का काम क्यों कर रही हैं

?क्या पाकिस्तान को क्लीन चिट देने की तैयारी कर रही है भारत की यूपीए सरकार ?

पिछले 25 वर्ष में 10,000 से अधिक हुई आतंकवाद की घटनाओं में से कुल चार–पांच घटनाओं को इस शब्द की रचना का आधार बनाने की कोशिश की जा रही है। इन घटनाओं में पहले इण्डियन मुजाहिदीन, हूजी या अन्य आतंकवादी संगठनों को आतंकियों को गिरफ्तार कर उनसे स्वाकृति कराई जा चुकी थी तथा घोटालो से घिरी केन्द्रीय सरकार ने अचानक हिन्दू संतो, नेताओं और कुछ हिन्दू संगठनों को इन घटनाओं में घसीटना शुरू कर दिया। साध्वी प्रज्ञा तथा कुछ अन्य लोगो को गिरफ्तार किए तीन वर्ष से अधिक हुए, उनके तीन–तीन बार नारको टैस्ट भी हुए, परन्तु किसी को भी सजा होना तो दूर, आज तक इनके खिलाफ कोई साक्ष्य भी प्रस्तुत नहीं किया जा सका है।

जो खून के हर कतरे से, पसीने की हर बूंद से, हर सांस से देशभक्त है उस आर.एस.एस. व आर.एस.एस. के नेताओं को आतंकी बताना तथा मारने की साजिश करना जबकि इस हादसे के बाद पाकिस्तान के विदेश मंत्री खुर्शीद महमूद जब भारत आए तो उनसे पूछा गया कि इसमें कौन मुलव्विस है तब उन्होंने कहा–I Do,nt know wheather They are Hindu or Muslim, how can I tell you ? जब इतना जिम्मेदार पाकिस्तानी मंत्री भी जो बात नहीं जानता यह फिर क्यों ?किसके इशारे पर ?वनवासी कल्याण आश्रम से जुड़े स्वामी असीमानन्द के कबूल नामे के जरिये जांच एजेंसियां भले ही समझौता एक्सप्रेस धमाके की गुत्थी सुलझाने का दावा कर रही हों, लेकिन इसके साथ ही इस पूरे मामले पर एक नया सवाल भी खड़ा हो गया है। वजह यह है कि इसी मामले में देश की सबसे प्रतिष्ठित फौरंसिक लैब में नार्को जांच के दौरान सिमी के सरगना सफदर नागौरी ने माना था कि यह साजिश उसी ने रची थी। असीमानंद के कबूल नामे के आधार पर जांच एजेंसियों ने समझौता धमाके की पूरी कहानी नये सिरे से खोलने का दावा किया है। एक वरिष्ठ अधिकारी बताते है कि मार्च, 2008 में इन्दौर से गिरफ्तार किये गए सिमी प्रमुख सफदर नागौरी ने भी पूछताछ में साफतौर पर माना था कि यह पूरी साजिश सिमी ने लश्करे–तैयबा की मदद से रची थी। चार अप्रैल, 2008 को मध्यप्रदेश की एक निचली अदालत से इजाजत लेने के बाद फौरेंसिक साईस लैब (एफ.एस.एल.), बैंगलूरू में सफदर, कमरूद्धीन नागौरी और आमीन

परवेज की नार्को जांच की गई। एफ.एस.एस., निदेशक बी.एम.मोहन ने 10 अप्रैल, 2008 को प्रेस कांफ्रैंस कर बताया था कि तीनों ने साढ़े चार घन्टे के नार्को में कई अहम खुलासे किए है। नागौरी के मुताबिक एहतेसाम सिद्धकी और अब्दुस्सुभान ने बम को छिपाया। जबकि लश्कर के आतकंवादी ने इंदौर के कटारिया बाजार से वह सूटकेस खरीदा, जिसमें बम छुपाया गया। हालांकि नागौरी के इकबालिया बयान से जांच की गुत्थी नहीं सुलझ सकी थी। जांच एजेंसियां इससे मेल खाने वाले साक्ष्य नही जुटा सकी थी। अब एन.आई.ए. के सामने भी असीमानन्द के कबूल नामे के मुताबिक साक्ष्य जुटाने की चुनौती होगी। असीमानन्द को दूसरे मामले की जांच कर रही दूसरी एजेंसी ने गिरफ्तार किया था।

इसके विपरित कांग्रेस के कई नेताओं को न केवल आतंकवाद की विभिन्न घटनाओं में सजा हुई बल्कि कई प्रकार के आतंकवाद की प्रेणता इनका शीर्ष नेतृत्व ही रहा है। इसकी चर्चा में अगले लेख में करूँगा।

(क्रमशः)

आज मैं बात कर रहा हूं कांग्रेस की मानसिकता की। **1993 के सूरत बम विस्फोट के अपराध में कांग्रेस के एक पूर्व मंत्री मोहम्मद सुरती सहित 7 अन्य मुस्लिम कांग्रेसी नेता सजा भुगत रहे है। गोधरा का वीभत्स अग्निकांड जिसमें 59 निरपराध रामभक्त हिन्दुओं को जिन्दा जलाया गया था, के षड़यंत्र में कांग्रेस के 15 से अधिक पदाधिकारी आरोपित है।** पंजाब का आतंकवाद, लिट्टे का भारत में प्रशिक्षण व सहयोग, पूर्वोत्तर का चर्च प्रेरित आतंकवाद तथा माओवाद का कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व से सम्बन्ध किसी से छिपा नही है। 1984 में 3000 सिखों का नरसंहार स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी व वीभत्स आतंकवादी घटना तो थी ही, इसको प्रेरित व क्रियान्वित करने में उस समय के शीर्ष कांग्रेसी नेतृत्व की भूमिका असंदिग्ध है। श्री राजीव गांधी का यह कथन कि जब पेड़ गिरता है तो धरती कांपती है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इंदिरा जी को आपातकाल के अपराधों के कारण गिरफ्तार करने पर भोला एवं देवेन्द्र पांडे द्वारा विमान अपहरण किया गया था। इस आतंकवादी कार्य को करने पर उन्हें कांग्रेस द्वारा विधायक बनाकर पुरस्कृत

करना आतंकवाद को प्रोत्साहन देने का सबसे बड़ा ज्वलंत उदाहरण है। कोयम्बटूर बम विस्फोट के घोषित अपराधी मदनी को जेल से छुड़ाने के लिए इसी कांग्रेस ने चुनावी फायदे के लिए सीपीएम के साथ मिलकर केरल विधानसभा में सर्वसम्मत प्रस्ताव पास कराया था। ऐसी और भी पचासों घटनाएं कांग्रेस के चरित्र को स्पष्ट करती है। कांग्रेसी नेताओं द्वारा रचे गए तर्क के आधार पर यदि विचार किया जाए तो आज कांग्रेस ही सबसे बड़ी 'आतंकवादी पोषक पार्टी' दिखाई देती है। ज्ञात हो आतंकवादी एवं देशद्रोही संगठन सिमी के साथ इनके निकट संबंध सर्वविदित है। जब राजग सरकार ने सिमी पर प्रतिबंध लगाया था तब संघ और सिमी की तुलना करने वाले राहुल गांधी तो क्या श्रीमती सोनिया गांधी तक संसद में सिमी के पक्ष में लड़ रही थी। इनके कार्यकर्ता सड़को पर सिमी के समर्थन में हिंसक प्रदर्शन कर रहे थे और न्यायालय में इनके प्रमुख मुस्लिम नेता सलमान खुर्शीद–फिर से गजनी की बाट जो रहे–सिमी के पक्ष में कानूनी लड़ाई लड़ रहे थे।

इतना तो स्पष्ट है कि घोटालो में आकंठ डूबी सरकार इन पर से जनता का ध्यान हटाने के लिए यह षड़यंत्र रच रही है। जेहादी आतंकवाद की लगातार बढ़ती भीषणता और इन घटनाओं में मुस्लिम समाज के कुछ युवकों के पकड़े जाने के कारण मुस्लिम समाज नाराज हो रहा है तथा उनकी नाराजगी कांग्रेस के लिए भारी पड़ रही है।उसका परम्परागत वोट बैंक खिसक रहा है। इसको वापस लुभाने के लिए तथा आतंकवाद को समाप्त करने में अपनी विफलता को छिपाने के लिए इन नेताओं ने इस प्रपंच को रचा है। मध्यप्रदेश में अपनी खोई जमीन को तलाश रहे कांग्रेसी नेता इस विषय में अधिक उत्साहित होकर मर्यादाविहिन हो रहे है। यह तथ्य सर्वविदित है कि इन्हीं के मुख्यमंत्रित्वकाल में सिमी निर्बाध रूप से फली–फूली थी तथा माओवादी नक्सलवादियों की गतिविधियों का मध्यप्रदेश में तेजी से विस्तार हुआ था। शायद इन्हीं पुराने सम्बन्धों के कारण बटला हाउस और आतंकवाद का गढ़ आजमगढ़ इनके प्रिय विषय हो जाते हैं। इन जैसे नेताओं द्वारा आतंकियों के समर्थन का ही परिणाम है कि वाराणसी बम विस्फोट के तार आजमगढ़ से जुड़े होने के बावजूद इन दुर्दांत आतंकियों को पकड़ने के लिए वहां जाने का साहस पुलिस नहीं जुटा पा रही है।

वास्तव में ये तथाकथित सेक्यूलर नेता इस देश में मुस्लिम समाज के मित्र नहीं अपितु उनके प्रच्छन्न शत्रु है। यह राष्ट्रवादी मुस्लिम समाज को समझना चाहिए। अमरीका की झोली में बैठकर पलने और मजा लेने वाली कांग्रेस के प्रति मुसलमानों में भी रोष है।

सन् 2007 से 2010 के प्रारम्भ तक यही सच था कि समझौता एक्सप्रेस विस्फोट पाक समर्थित आतंकी संगठन ने किया, परन्तु अब सन् 2010 के दो–चार मास में ही कुछ हिन्दू युवकों को पकड़कर उन्हें कसूरवार बनाने का सीधा मतलब है कि पाकिस्तान को आतंकवाद से क्लीन चिट देना। आतंकी संस्थाओं व आतंकियों को निर्दोष ठहराना, यह सब षड़यंत्र किसके इशारे पर और क्यों ?कुछ कांग्रेसी नेता, कुछ जांच व खुफिया एजेंसियों के अफसर और कुछ मीड़िया से जुड़े लोग यह काम कर रहे है।कहीं यह सी. आई.ए. व आई.एस.आई. के भारी पैसे का तो खेल नहीं ? देश के राष्ट्रभक्त हिन्दू तो यही महसूस कर रहे है।

(क्रमशः)

आज के वक्त में इस बात की गारंटी नहीं ली जा सकती कि किसी भी विशाल संगठन में कुछ लोग गुमराह नहीं हो सकते या कट्टरपंथी नहीं हो सकते। तीन–चार घटनाओं के तार आपस में जोड़कर या संघ के वरिष्ठ प्रचारक इन्द्रेश कुमार का नाम घसीट कर पूरे संघ को आतंकवादी संगठन कैसे करार दिया जा सकता है? **संघ प्रमुख मोहन भागवत ने स्पष्ट कर दिया है कि संघ में कट्टरपंथ के लिए कोई जगह नहीं है।** हैरानी की बात यह है कि आतंकवाद का प्रतिकार करने वाला साम्प्रदायिक हो जाता है। **देश के भीतर और बाहर सब तरह की उत्तेजनाओं के बावजूद भी भारत यदि अब तक धर्मनिरपेक्षता पर डटा हुआ है तो उसका एकमात्र कारण हिन्दू परम्परा और हिन्दू मानस ही है जिसे कुछ लोग दिन–रात कोसते रहते है।**

कहीं कांग्रेस संघ को प्रतिबंधित कर राष्ट्र के तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोगों का जमावड़ा इकटठा कर फिर से सत्ता पर काबिज होने का षड़यंत्र को नहीं रच रही। आखिर कांग्रेस और अन्य दल संघ से भयभीत क्यों रहते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जन्म सन् 1982 विक्रमी (सन् 1925)

की विजयादशमी को हुआ। संघ के संस्थापक डा.केशवराव बलिराम हेड़गेवार के बारे में कहा जा सकता है कि वे जन्मजात देशभक्त थे। छोटी आयु में ही रानी विक्टोरिया के जन्मदिन पर स्कूल से मिलने वाली मिठाई का दोना उन्होंने कूड़े में फैंक दिया था। भाई द्वारा पूछने पर उत्तर दिया–हम पर जबर्दस्ती राज करने वाली रानी का जन्मदिन हम क्यों मनाएं ?इस वृत्ति के कारण जैसे–जैसे वे बड़े हुए राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ते गए। वन्देमातरम् कहने पर स्कूल से निकाल दिए गए, बाद में कलकत्ता क्रांतिकारी की गति–विधियों का प्रमुख केन्द्र बना। वहां रहकर उन्होंने अनेक प्रमुख क्रांतिकारियों के साथ काम किया। लौटकर उस समय के प्रमुख नेताओं के साथ आजादी के आन्दोलन से जुड़े रहे। 1920 के नागपुर अधिवेशन की सम्पूर्ण व्यवस्थाएं सम्हालते हुए पूर्ण स्वराज्य की मांग का आग्रह डा.साहेब ने कांग्रेस नेताओं से किया। उनकी बात तब अस्वीकार कर दी गई।बाद में 1929 के लाहौर अधिवेशन में जब कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पारित किया तो डा. हेडगेवार ने उस समय चलने वाली सभी संघ शाखाओं से धन्यवाद पत्र लिखवाया।

आजादी के आन्दोलन में डा.हेडगेवार स्वयं दो बार जेल गए। उनके साथ और भी अनेकों स्वयंसेवक जेल गए। फिर भी आज तक यह झूठा प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि आजादी के आंदोलन में संघ कहां था। डा.साहब को दूसरी सबसे बड़ी पीड़ा यह थी कि इस देश का सबसे प्राचीन समाज यानी हिन्दू समाज राष्ट्रीय स्वाभिमान से शून्य प्रायः आत्मविस्मृति में डूबा हुआ है, उसको मैं अकेला क्या कर सकता हूं, की भावना से ग्रसित कर लिया है। इस देश का बहुसंख्यक समाज यदि इस दशा में रहा तो कैसे यह देश खड़ा होगा। इतिहास गवाह है कि जब–जब यह बिखरा रहा तब–तब देश पराजित हुआ है।

संघ की प्रार्थना, प्रतिज्ञा, एकात्मता स्त्रोत, एकात्मता मंत्र जिनको स्वयंसेवक प्रतिदिन ही दोहराते हैं, उन्हें पढ़ने के पश्चात संघ का विचार, संघ में क्या सिखाया जाता है, स्वयंसवकों का मानस कैसा है, यह समझा जा सकता है। प्रार्थना में मातृभूमि की वन्दना, प्रभु का आशीर्वाद, संगठन के कार्य के लिए गुण, राष्ट्र के परम वैभव (सुख–शांति–समृद्धि) की कल्पना की गई है। प्रार्थना में

हिन्दुओं का परम वैभव नहीं कहा है, राष्ट्र का परम वैभव कहा है। सभी की सुख–शांति की कामना की है। सभी के अंत में भारत माता की जय कहा है। हर स्वयंसेवक के मन का एक ही भाव बनता है–हम भारत की जय के लिए कार्य कर रहे हैं। एकात्मता स्त्रोत व मंत्र में भी भारत की सभी पवित्र नदियों, पर्वतों, पुरियों सहित देश व समाज के लिए कार्य करने वाले प्रमुख व्यक्तियों महर्षि वाल्मीकि, बुद्ध, महावीर, गुरूनानक, गांधी, रसखान, मीरा, अम्बेड़कर, महात्मा फूले सहित ऋषि, बलिदान, समाज सुधारक, वैज्ञानिक आदि का वर्णन है। संघ के सभी संस्थानों में महाराणा प्रताप, गुरू गोविन्द सिंह और छत्रपति शिवाजी का चित्र इकटठा लगा रहता है। मुगलों के विरूद्ध इन तीनों महान देशभक्तों के चरणों में नतमस्तक संघ के स्वयंसेवक राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत भारत की रक्षा और कल्याण हेतु कार्य करते हैं और अंत में भारत माता की जय। इस सबका ही परिणाम है कि संघ के स्वयंसेवक के मन में जाति–बिरादरी, प्रांत–क्षेत्रवाद, ऊंच–नीच, छूआछूत आदि क्षुद्र विचार नहीं आ पाते। जब भी कभी ऐसे अवसर आए जहां **सेवा की आवश्यकता पड़ी वहां स्वयंसेवक कथनी व करनी में खरे उतरे हैं।** (क्रमशः)

(16)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा किए जा रहे कार्यों को देखें तो राष्ट्र पर जब भी आपदा आई, स्वयंसेवकों ने अपनी सेवा की मिसाल खड़ी की। **जब सुनामी लहरों का कहर आया तब वहां स्वयंसेवकों ने जो सेवा कार्य किया उसकी प्रशंसा वहां के ईसाई व कम्युनिस्ट बंधुओं ने भी की है।** अमरीका के कैटरीना के भयंकर तूफान में भी वहां स्वयंसेवकों ने प्रशंसनीय सेवा की है। कुछ वर्ष पूर्व चरखी दादरी हरियाणा में दो हवाई जहाजों के टकरा जाने के परिणाम स्वरूप 300 से अधिक लोगो की मृत्यु हो गई। दुर्भाग्य से सभी मुस्लिम समाज के थे उनकी सहायता करने सैक्युलरिस्ट नहीं गए। सभी के लिए कफन, ताबूत आदि की व्यवस्था, उनके परिजनों को सूचना देने का काम, शव लेने आने वालों की भोजन, आवास आदि की व्यवस्था वहां के स्वयंसेवकों ने की। इस कारण वहां की मस्जिद में स्वयंसेवकों का अभिनन्दन हुआ, मुस्लिम पत्रिका रैडियैंस ने शाबास आरएसएस शीर्षक से लेख छापा।

दूसरा दृश्य भी देखें जब राजनीतिज्ञों व तथाकथित समाज विरोधी तत्वों द्वारा विशेषकर हिन्दू समाज को विभाजित करने के प्रयास हो रहे है तब स्वयंसेवक समाज में सामाजिक समरसता निर्माण करने का प्रयास कर रहे है। राष्ट्रीय सुरक्षा के मोर्चे पर भी स्वयंसेवक खरे उतरे है। **सन् 47–48, 65,71 के युद्ध के समय सेना को हर प्रकार से नागरिक सहयोग प्रदान करने वालों की अग्रिम पंक्ति में थे स्वयंसेवक।** भोजन, दवा, रक्त जैसी भी आवश्यकता सेना को पड़ी तो स्वयंसेवकों ने उसकी पूर्ति की। यही स्थिति गत कारगिल के युद्ध के समय हुई। इन्होंने न सरकार से मुआवजा लिया न ही मैड़ल। यही है निःस्वार्थ देश सेवा। संघ का इतिहास है, अन्य कुछ नहीं। **सेना के एक अधिकारी ने कहा–राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत का रक्षक भुजदण्ड है।**

देश के कर्णधारों ने संघ की शक्ति का सदुपयोग राष्ट्र के पुनर्निर्माण में करने की बजाय हमेशा उसकों कठघरे में खड़ा किया। तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दलों के नेता और चंद बुद्धिजीवी कभी पूर्वाग्रह से मुक्त नहीं हुए और न ही उन्होनें इसकी ताकत को पहचाना। एक ही रट लगाए रखी कि संघ साम्प्रदायिक है। हिन्दू की सोच दार्शनिक, शांतिपरक और समन्वयात्मिक है, हिन्दू अहिंसावादी है। हिन्दू दूसरों की भांति संगठित और आक्रामक नहीं है। लंबे काल खंड में इसने अहिंसा को अपना लक्ष्य बनाया जिसे कायरता समझ लिया गया। हिन्दू व्यक्तिवादी होता गया और संगठित नहीं हुआ। हमारे ऋषि की देन 'एक सद्विप्राः बहुदा वदन्ति' के घोष वाक्य की देन के कारण ही हिन्दू समाज के बहुसंख्यक होते हुए भी कई असामान्य फैसले किए। इसमें किसी प्रकार की विवशता नहीं थी। कभी हिन्दुओं ने देश के विभाजन की त्रासदी को झेला तो कभी स्वाधीन भारत के संविधान में अपने से अधिक अधिकार और सुविधाएं दूसरों को प्रदान की। **समस्या यह भी है कि कांग्रेसी अपने हित के लिए देश के सौहार्दपूर्ण माहौल की बलि देने में जरा भी नहीं हिचकते।** दूसरी समस्या यह है कि आम जनता के बीच कांग्रेस का विकल्प नहीं। भाजपा के पास न कोई जेपी है और न ही कोई दीनदयाल उपाध्याय। कुल मिलाकर भाजपा के पास श्री अडवाणी, श्री अरूण जेतली, सुषमा स्वराज, डा.मुरली मनोहर जोशी और नरेन्द्र मोदी सरीखें दिग्गज ही बचे है। अब इन्हीं नेताओं पर देश की जनता की नजरें टिकी हुई है कि कांग्रेस की भ्रष्ट, कालेधन और परिवारवाद के विरूद्ध ये कैसे लड़ते है। अगर भाजपा के उपरोक्त वर्णित

सभी नेता कड़ी मेहनत करें तो 2014 के चुनावों की तस्वीर बदल सकती है।

अंत में हम बात करें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की। अगर देश में संघ पर आतंकवादी संगठन करार देकर प्रतिबंध लगाया गया और हिन्दुओं को आतंकवादी करार दिया गया तो इस देश का भगवान ही मालिक है। **सत्ता में आसीन लोगों को याद रखना होगा कि श्रीराम और श्रीकृष्ण की भूमि पर सैलाब में सब कुछ अपने साथ बहा ले जाने की शक्ति होती है और पीछे जमीन को फिर से उर्वरा बनाने की भी। सभी को राष्ट्र की शक्ति को पहचानना होगा।**

जय भारत, जय भारत, जय भारत।

——— 000 ———

निवेदक:-

विद्या भारती, राजस्थान

सेवा धाम

सेक्टर ४, जवाहर नगर, जयपुर

ई-मेल : vbrajasthan@gmail.com

ऑनलाईन संस्करण: श्रेष्ठभारत

www.shreshthbharat.in

इस पुस्तक से !

यह देश का दुर्भाग्य रहा है की कांग्रेस पार्टी ने इस्लामी आतंकवाद के विरुद्ध एक शब्द तक नही बोला !

हद तो तब हो गई जब रौल विसी ने अमरिकी राजदुत टिमोथी रोमर से भारत की आंतरिक स्थिति की चर्चा करते हुए हिन्दु आतंकवाद को आतंकी संगठन लश्कर से भी खतरनाक बताया !

क्या मोहनदास करमचंद गांधी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन करके इस्लामी आतंकवाद को पनपाने का काम नहीं किया था ?

जब राजग ने सिमी पर प्रतिबंध लगाया था तब संघ और सिमी की तुलना करने वाले रौल विंसी तो क्या सोनिया गांधी तक संसद मे सिमी के पक्ष मे लड़ रही थी !

१९३० से से लेकर १९४७ तक का ही स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास किसी ऐसी लेखनी का पढ़ लें , जो न तो बिकी हुई हो और न ही लाल रंग मे रंगी , तो आपकी आत्मा क्रांतिकारियों के साथ हुए अन्याय से चीत्कार कर उठेगी !

भारत में भगवान राम लोगों के रोम - रोम मे बसे है लेकीन श्रीराम मन्दिर का निर्माण नहीं हो रहा । यह इस राष्ट्र के लिये शर्म की बात है । आखिर बाबर कौन था ? कोई संत या महात्मा ? सोचना आपको है